*** श्रीमत ***

मिलना है बाबा से तो तन मन को रखो शुद्ध।

बाबा याद हो इतना जो माया से ना हो युद्ध।

मंजिल पर रखो नजर न देखो दाएं और बाएं।

इक बाबा की याद से ये जीवन पवित्र बनाएं।

चले ये मन सीधी राह पर हमको ना भटकाए।

थामकर लाठी श्रीमत की मंजिल पर पहुंचाए।

विश्व परिवर्तन में दिन बच गए है अब थोड़े।

सयाना वही है जो माया से अपना मन मोड़े।

पवित्रता अपनाकर सच्चे ब्राह्मण बन जाएँ।

श्रीमत पर सेवा करके स्वर्ग का वर्सा पाएँ।

ॐ शांति !!!